श्री जनेश्वर मिश्र: मैडम, यह एक सलाह है और इस पर विचार किया जा सकता है।

Setting-up of Mini Refineries

*242. SHRI VEDPRAKASH P. GOYAL: Will the Minister of PETROLEUM AND NATURAL GAS be pleased to state:

(a) whether the concept of setting-up of mini refineries as per the agreement reached between Indian Institute of Petroleum and US based United Technologies Inc., has been conveyed to oil industry and business houses;

(b) if so, the details of the concept;

(c) the advantages of having such refineries; and

(d) by when it is likely to be implemented?

THE MINISTER OF PETROLEUM AND NATURAL GAS (SHRI JANESHWAR MISHRA): (a) to (d) A statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) to (d) A concept of setting up mini refinery has been prepared by Indian Institute of Petroleum (IIP), Dehra Dun in agreement with United Technologies Inc., (USA). The concept of Mini Refinery is to convert small quantities of crude oil available mainly from specific small oil fields located in remote areas having insufficient rail/road transportation facilities.

The concept was examined in consultation with the Oil Industry and it has revealed that further analysis need to be done by IIP to establish the techno-economic feasibility of setting up such a mini refinery in India.

श्री वेद प्रकाश पी० गोयल: महोदया, हमसे अपेक्षित है कि हम सवाल पाइंटिड करें। क्या मैं मंत्री महोदय से पूछ सकता हूं कि क्या वे भी अपेक्षित सवालों का पाइंटिड जवाब देंगे? मेरे चारों सवालों का कोई जवाब इनके उत्तर में नहीं है और उसी में से मेरा सप्लीमेंट्री प्रश्न पैदा होगा।

पहले प्रश्न में मैंने पूछा था ऑयल इंडस्ट्री से कंसर्न्ड तेल उद्योग और बिजनिस हाउसिज को इस अवधारण की जानकारी दी है कि नहीं इसके जवाब में कहा है कि ऑयल इंडस्ट्री से कंसल्ट किया है। आज लिबरलाइजेशन के जमाने में ऑयल इंडस्ट्री के सिवाय जो दूसरे बिजनिस में इन्टरेस्टिड हैं वह भी इसको पिक-अप कर सकतें हैं, उनसे कोई सलाह नहीं हुई और उनको शायद यह कनवे भी नहीं किया।

दूसरा, मैंने पूछा था कि डिटेल, क्या है? मिनी का मतलब क्या है? हर क्षेत्र में मिनी का कोई मतलब होता है, जिसने जो मतलब निकालना हो वह नहीं निकाल सकता है। इसका मिनिमम और मैक्सिमम साइज क्या है, किस परिधि के अन्दर यह बैठता है, इसको कुछ मालूम नहीं है। मिनी रिफाइनरी का जो सवाल था वही जवाब में रिपीट कर दिया है।

तीसरा, मैंने पूछा था कि इसके एडवांटेजिज क्या है? उसका जवाब में कोई जिक्र नहीं है। आखिर जब एग्रीमेंट किया है तो कुछ एडवांटेज तो इसके बताये होंगे। एग्रीमेंट कैसे किया, क्यों सरकार ने पैसा खर्चा?

चौथा सवाल था कि इसको कब इम्पलीमेंट करने वाले हैं? आज इतनी एनर्जी क्राइसिज है, उसके बावजूद भी इसको अभी आई०पी०पी० एक्जामिन करेगी, एनालाइज करेगी कब जवाब देगी, कब होगा, इसकी कोई कल्पना नहीं है, इसका कोई संकेत नहीं है।

मैं पहला पूरक प्रश्न पूछना चाहता हूं कि इसकी कल्पना क्या है और कहां-कहां पर ऐसे ऑयलस फील्ड मिले हैं? और प्राईवेट सेक्टर को या किसी और को इसमें इन्वाल्व करने का आपका कोई इरादा है या नहीं है?

श्री जनेश्वर मिश्र: मैडम, मिनी रिफाइनरी का मतलब है कि .05 से लेकर के .5 तक जिस रिफाइनरी से प्रोडक्शन एनुअली होता है उसके मिनी रिफाइनरी कहा जाता है।

श्री वेद प्रकाश पी० गोयल: युनिट क्या है?

श्री जनेश्वर मिश्र: मीट्रिक टन। मैडम, असल में यह आउट-डेटिड टैक्नोलोजी है।

प्रो० राम लखन सिंह यादव: मिलियन या मैट्रिक टन?

श्री जनेश्वर मिश्रः मैट्रिक टन। ...(**व्यवधान**)...

श्री राधवजीः 0.5 का मतलब क्या है?

श्री जनेश्वर मिश्रः 0.5 के मायने बहुत कम हैं, इसको क्या जोड़ें, जहां तक आउट डेटेड टैक्नोलोजी है, देहरादून में हमारा जो इंस्टीट्यूट है, वह सी॰एस॰ आई॰आर॰ का है। वह रिसर्च एंड डवलपमेंट का काम करता है। एक अमेरिकी कम्पनी से अभी उसकी अंडरस्टैंडिंग हुई है और उसने उसको हमारे यहां भेजा है। हमारा मंत्रालय इस तरह के मिनी प्लांट के बारे में फिजिबिलिटी देखता है और आम तौर से इनकी फिजिबिलिटी होती नहीं है। क्योंकि हमारा इस तरह का एक छोटा प्लांट देश भर में—मद्रास में है और वहां से जो उत्पादन होता है बड़े कारखानों के मुकाबले चौथाई के बराबर हो जाता है। तो इस तरह की बातों को बहुत तरजीह नहीं दी जाती और सवाल ही नहीं पूछा जाता।

चीन में इस तरह के मिनी प्लांट बहुत थे। उनको बैन करने की बात चल रही है। इस समय तो यह देखा जाता है कि ऐसी टेक्नोलोजी निकाली जाए जिससे कि तेल और उसका उत्पाद कम से कम दाम पर उपभोक्ताओं को मिल सके। यह बहुत महंगी चीज है। तो इसकी फिजिबिलिटी अध्ययन करने के लिए जितना समय लगता है वह लग रहा है।

श्री वेद प्रकाश पी॰ गोयलः महोदया, मंत्री जी ने कहा कि आउट डेटिड टेक्नोलोजी है। चीन में भी छोटे-मोटे प्लांट बंद हो रहे हैं। तो सरकार का पैसा क्यों जाया कर रहे हैं। दोबारा, उसकी फिजिबिलिटी को अपनी इंडियन पैट्रोलियम कम्पनी स्टडी करे, यह रिसोर्सेज को क्यों वेस्ट कर रहे हैं। उसी रिसोर्सेज को लगाकर और कोई बड़ा रिफाइनरी प्लांट खड़ा किया जा सकता है। इसके बारे में उनको स्वयं मालूम है कि इसमें कुछ होने वाला नहीं है, कास्ट भी चार गुना आती है। तो यह सारा नाटक करने की जरूरत क्या है।

मैं दूसरा सवाल पूछना चाह रहा हूं कि कोई तो टाईम फ्रेम होगा जिसमें आप या तो इसको टेक-अप करेंगे या इसको ड्रोप करेंगे। कोई सीमा है या यह अध्ययन होता ही रहेगा?

श्री जनेश्वर मिश्रः मैडम, कई चीजों का अध्ययन करना पड़ता है। नम्बर-1, दूरदराज के इलाके में कहीं तेल निकल गया उसको बंडी रिफाइनरी तक ले जाने में ढुलाई खर्चा देना होगा, दूसरे, जो तेल निकालकर और उसको रिफाइनरी के जरिए हम कुछ पैदा कर सकते हैं दूसरी किस्म का तेल-क्रूड ऑयल। तो उसके लिए नजदीक में मार्केट है या नहीं और यह अध्ययन करने में समय तो लगता ही है। आम तौर से जहां इस तरह का तेल निकलता है नजदीक की बड़ी रिफाइनरी में उसको भेज दिया जाता है।

श्री वेद प्रकाश पी॰ गोयलः ऐसा तेल मिला है क्या काफी मात्रा में? देश भर में कोई 100-50 जगह है क्या?

श्री जनेश्वर मिश्रः 100-50 तो नहीं है लेकिन दो-चार हैं।

श्री वेद प्रकाश पी॰ गोयलः क्यों वेस्ट कर रहे हैं।

श्री जनेश्वर मिश्रः एक तो रवा है आंध्र प्रदेश में, ऐसे ही एक अरुणाचल प्रदेश में है। एक-दो जगह और मिला है जैसे मद्रास में बताया गया। लेकिन ऐसे ही बहुत मेहनत से और कहीं-कहीं निकल आता है खुदाई में। उसकी मात्रा कितनी है इसकी गारंटी नहीं होती। अगर कोई भी प्लांट हम लगाएंगे तो 50 साल, 100 साल के लिए लगाएंगे। अगर उसके नीचे की मात्रा खत्म हो जाए तो वह पैसा बिल्कुल निरर्थक चला जाएगा। इसलिए इसको अध्ययन करने में बहुत वक्त लगता है।

श्री जलालुद्दीन अंसारीः महोदया, भारतीय पैट्रोलियम संस्थान, देहरादून ने अमेरिका की यूनाईटेड टेक्नोलोजिज इंक॰ के साथ करार करके लघु रिफाइनरी बनाने की अवधारणा तैयार की है। मंत्री जी ने अपने उत्तर में यह बताया है कि तेल उद्योग के साथ परामर्श करके इस अवधारणा की जांच की गई और यह बात सामने आई कि भारत में ऐसी लघु रिफाइनरी की स्थापना की तकनीकी, आर्थिक व्यवहारिकता देखने के लिए भारतीय पैट्रोलियम संस्थान द्वारा और अधिक विश्लेषण करने की आवश्यकता है। मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि इसकी फिजिबिलिटी तय करने के लिए कालबद्ध प्रोग्राम है और कब तक इसको करेंगे कोई अवधि निश्चित है? या इसकी फिजिबिलिटी पर बहुत दिनों तक काम करते चलेंगे तो इसका कोई परिणाम नहीं निकलेगा। मैं इसी बात को जानना चाहता हूं कि भारतीय पैट्रोलियम संस्था कब तक इसकी व्यवहारिता सिद्ध करने में सफल होगी?

آخری جلال الدین انصاری: جاری ہے
یا کسی فزیبلیٹی پر بہت دنوں تک کام کریں گے

چلیئے تو اسکا کوئی نتیجہ نہیں نکلے گا -
میں اس بات کو جاننا چاہتا ہوں کہ
بھارتیہ پیٹرولیم سنستھا ایک تک اسکی
ویوھارتا سدھ کرنے میں کامیاب ہوگی ؟

श्री जनेश्वर मिश्र: माननीय सदस्य खुद कह रहे हैं कि देहरादून के इंस्टीट्यूट ने इसकी अवधारणा जाहिर की है। अवधारणा की व्यवहारिता कितने दिनों में तय होती है इसकी कोई निश्चित तारीख नहीं है।

PROF. RAM KAPSE: The feasibility report was made not by the Department, but by the institution in consultation with a U.S. company. I would like to know when the feasibility report was submitted to your department and how much time your department will take to study the issue.

प्रो० राज बख्श सिंह: मैं माननीय मंत्री जी के उत्तर के संबंध में जानना चाहता हूं कि जो मिनी रिफाइनरी लगनी है उसकी व्यवहार्यता के बारे में उन्होंने कहा है कि इसकी कैपेसिटी .05 से लेकर .5 मीट्रिक टन तक होगी। मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि .5 मीट्रिक टन का मतलब तो शायद 5 क्विंटल होता है और .05 का अर्थ आधा क्विंटल होता है तो क्या इतने स्माल स्केल पर मिनी रिफाइनरी लगाने की कोई व्यवहारिता होगी?

माननीय सदस्य: इसमें गलती तो नहीं है?

श्री जनेश्वर मिश्र: खैर हिसाब-किताब बाद में होगा। वह मैं जोड़कर बता दूंगा लेकिन जहां कहीं भी तेल निकल आता है, उसमें एक संभावना तो यह रहती है कि इसके नीचे और निकलेगा। तो वह तो हमें पता नहीं है। हमने शुरू में कह दिया है कि इसकी व्यवहारिता के बारे में बहुत विवाद चल रहा है। शुरू के जमाने में सौ साल पहले इस तरह की रिफाइनरी लगा करती थी। डिगबोई रिफाइनरी भी उसी समय में लगी थी। लेकिन अब इस तरह की रिफाइनरी आमतौर से लोग नहीं लगाते हैं।

श्री गोविन्दराम मिरी: उन्होंने जो हिसाब-किताब बताया है वह सही है या नहीं है?

श्री जनेश्वर मिश्र: हिसाब-किताब बाद में जोड़ा जायेगा।

THE DEUPTY CHAIRMAN: Is it one metric ton or million tonne? Metric ton?

SHRI JANESHWAR MISHRA: Yes.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Then it is very small. Now, Shri Parag Chaliha.

SHRI PARAG CHALIHA: Madam, as we all know, in Assam, we have one of the oldest refineries in the world, the Digboi Refinery. The capacity was 0.75 million till the other day. It was then raised to a maximum capacity of one million only. In the same way, there was a big movement in respect of the establishment of the Barauni Refinery with crude oil entirely from Assam and as a sequel to the movement, a toy refinery was established at Guwahati, known as the Guwahati Refinery. As far as I know, the capacity of the Guwahati Refinery, after all these developmental works and all that, came to be about one million. May I know from the Minister who has recently taken charge and is hopeful about them, whether any plans are afoot to develop one of the oldest refineries of the world, the Digboi Refinery, and the Guwahati Refinery, which has been so far known as only a toy refinery. Is there any plan for that?

श्री जनेश्वर मिश्र: मैडम, मैं पहले करेक्ट कर दूं अपने को, वह मिलियन टन था, मीट्रिक टन नहीं। हम गलत बोल गये थे और गलती के लिए माफी मांगना भी हमें आता है।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Because oil is always measured in million tonnes, not in metric tonnes.

श्री जनेश्वर मिश्र: दूसरी बात जो उन्होंने डिगबोई के बारे में पूछी, डिगबोई की केपेसिटी शुरू के दिनों में, 100 साल पहले 0.5 मिलियन टन थी। अब वह बढ़ कर के 0.65 मिलियन टन हो गई है। वहां पर बाहर से भी क्रूड भेजा जाता है और कुछ बनाने के लिए गोहाटी के बारे में भी उसकी क्षमता घट रही है। सरकार की तरफ से प्रयास होगा कि इसको बढ़ाया जाए।

SHRI PARAG CHALIHA: Madam, the Minister has not addressed himself to the main thrust of my quesiton. I want to know whether there is any plan to develop these refineries, particularly, the Digboi refinery, in view of the fact that it is one of the oldest refineries in the world.

श्री जनेश्वर मिश्र: हमने शुरू में ही कह दिया है कि विकसित करने के लिए प्रयास किया जाएगा।

श्री नरेन्द्र मोहन: माननीय मंत्री जी ने अपने उत्तर को स्पष्ट कर दिया कि यह मिलियन टन था। वह तो ठीक है लेकिन जैसे कि आपने स्वयं बताया कि इतनी छोटी, मिनी रिफाइनरी लगाने के लिए जो उत्पादन लागत आने वाली है, वह चौगुनी अधिक आने वाली है, इसलिए इसकी उपयोगिता नहीं है। जब आप स्वयं इस बात को महसूस कर रहे थे कि इतनी छोटी रिफाइनरी लगाने से कोई उपयोगिता नहीं है तब इस प्रकरण को समाप्त करने के लिए निर्देश देने में आपको क्या कठिनाई है?

दूसरी, इसी संदर्भ की बात है कि पेट्रोलियम की फिर भी देश को आवश्यकता है। आपके समक्ष गैसो-आयल के प्रोजेक्ट के बारे में कई बार चर्चा आ चुकी है। उसके बारे में आप क्या सोच रहे हैं?

श्री जनेश्वर मिश्र: फीज़िबिलिटी रिपोर्ट तैयार करते समय कई चीजें विचार की जाती हैं। शुरू में मैंने कहा था कि दूरदराज़ में अगर कहीं तेल निकलता है तो उसको रिफाइनरी तक ले जाने में ढुलाई का ज्यादा खर्च न पड़ जाए, एक तो उसको सोचा जाता है। दूसरा यह सोचा जाता है कि जहां तेल निकला है उसके नज़दीक कोई मार्किट है या नहीं है। आखिर तक इसका अध्ययन करते रहना चाहिये कि अगर किसी तरह से तेल वहां पहुंचा देने के लिए जो नज़दीक का इलाका है, ढुलाई का खर्च बच जाए तो इस पर विचार करते रहना चाहिये और यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इसलिए दरवाजा कभी बन्द नहीं करना चाहिये, मैं इस राय का हूं। गैसो-आयल के बारे में माननीय सदस्य को मैं विभाग से जानकारी ले कर बता दूंगा।

*243. **[The Questioner (Shri Karnendu Bhattacharjee) was absent. For answer** *vide* col.....infra]

*244. **[The Questioner (Shri Ram Jethmalani) was absent. For answer** *vide* col.....infra]

Revival of MCFL by KRIBHCO

*245. SHRI NILOTPAL BASU:
SHRI JIBON ROY:

Will the Minister of CHEMICALS AND FERTILIZERS be pleased to refer to answers to the Unstarred Questions 4459, 746 and 801 given in the Rajya Sabha on the 16th May, 1997, 28th February, 1997 and 29th November, 1996, respectively, and state:

(a) whether the commitments of KRIBHCO for its ongoing projects had to be changed to undertake the revival of M/s Mangalore Chemcials and Fertilizers Limited (MCFL);

(b) if so, the changes made; and

(c) if not, the reasons therefor?

THE MINISTER OF CHEMICALS AND FERTILIZERS (SHRI M. ARUNACHALAM): (a) to (c) No investment decision in regard to the rehabilitation of Mangalore Chemicals & Fertilizers Ltd. (MCFL) has been taken by KRIBHCO which is exploring its feasibility as a diversification option. KRIBHCO has not changed any of its investment commitments on account of its interest in the rehabilitation of MCFL.

The question was actually asked on the floor of the House by Shri Nilatpal Basu.

SHRI NILOTPAL BASU: Madam, you had been a witness to the agitation yesterday in this House about the revival of sick public sector fertilizer units. Now, FRIBHCO is a cooperative sector fertilizer unit in which the Government of India has 80 per cent equity. This company is paying tax to the tune of Rs. 85 crores every year. Because of the huge cash reserves it was contended earlier that some of the surplus could be invested to revive some of the public sector units. It was mentioned earlier by the Ministry of Chemicals and Fertilizers that this could not be done because of their pre-occupation with other investment decisions.